

Padma Shri



SHRI BIREN KUMAR BASAK

Shri Biren Kumar Basak is the master weaver and founder of Biren Basak and Company, known globally for its sarees in Tangail and Jamdani weaving style. He is an artist and entrepreneur who embraced new ideas and created innovative methods for implementing intricately hand-woven rich motifs in our handloom sarees, which laid the foundation for the socio-economic growth of more than ten thousand weavers in Phulia, West Bengal. His immense efforts and perseverance have made Indian handloom sarees well known for their design and quality throughout the world.

2. Born on 16th May, 1951, though originally from Tangail in East Pakistan, Shri Basak was forced to migrate to Phulia in 1961 due to communal tensions. Since Shri Basak and his family came to India without any assets, their financial resources depleted swiftly. The dire circumstances didn't allow him or his five other siblings to study as they took up odd jobs at weaving factories. At the age of 13, Shri Basak joined his father, Shri Banko Bihari Basak, at a local saree weaving unit earning Rs 2.5 per day in 1964. He spent his teenage years selling sarees door-to-door and worked his way up to build Biren Basak and Company in 1987.

3. In 1987, Shri Basak started Biren Basak and Company with eight staff members in his house and trained them in Tangail and Jamdani weaving style in Phulia with an aim to financially empower local weavers and provide them with a platform that he never had. Alongside, he rigorously practiced and evolved his skills. He innovated his designs and experimented with challenging techniques. His lifelong quest has been to search for better and more effective ways to implement his designs and arts to empower artisans to be independent and lifelong also succeed against the stiff competition with the mechanized power loom industry. Defined by intricately hand-woven rich motifs, Jamdani is a weft technique of weaving. By virtue of its intricate design, it is considered to be an advanced and challenging hand-weaving technique. The process is time-consuming and each saree can take up to a year.

4. In 2015, Shri Basak's name was entered in the Limca Book of Records for weaving "First dakai Sari woven with Ramayana". It took two and a half years to weave the saree wherein the warp is in muslin kora and the weft in tussar silk. The same was also recognized in the India Book of Records in 2015. Further in 2015, his name was entered in the India Book of Records for weaving a saree with Jamdani work on warp tussar silk and muga silk displaying different moods of Lord Ganesha. It took him 1.2 years to complete this saree. He achieved Guinness World Record for weaving the longest sari in the world, measuring 3,726.43 m (12,225 ft 9 inch) in 2018.

5. Shri Basak is a recipient of numerous certificates, awards, and accolades. He received Certificate of Merit 2009, National Award in 2012, and the Sant Kabir Award in 2013 from the Office of the Development Commissioner for Handloom, Ministry of Textiles, Government of India.



श्री वीरेन कुमार बसाक

श्री वीरेन कुमार बसाक, एक निपुण बुनकर और बीरेन बसाक एंड कंपनी के संस्थापक हैं, जो तंगेल और जामदानी बुनाई शैली की साड़ियों के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं। वह एक कलाकार और उद्यमी हैं जिन्होंने नए विचारों को अपनाया और हथकरघा साड़ियों में हाथ से बुने हुए बारीक और सुंदर रूपांकनों के लिए अभिनव पद्धतियां तैयार कीं, जिससे पश्चिम बंगाल के फुलिया में दस हजार से अधिक बुनकरों के सामाजिक-आर्थिक विकास का सूत्रपात हुआ। उनके भरसक प्रयास और लगन से भारतीय हथकरघा साड़ियां दुनिया भर में अपने डिजाइन और गुणवत्ता के कारण मशहूर हो गई हैं।

2. श्री बसाक का जन्म 16 मई, 1951 को हुआ। वह मूल रूप से पूर्वी पाकिस्तान के तंगेल के थे लेकिन सांप्रदायिक तनाव के कारण वह मजबूर होकर 1961 में फुलिया आ गए। श्री बसाक और उनका परिवार खाली हाथ भारत आया था, इसलिए उनकी माली हालत खराब होने लगी। विकट परिस्थितियों के कारण वह और उनके पांच भाई-बहन पढ़ाई नहीं कर पाए क्योंकि उन्हें बुनाई कारखानों में छोटे-मोटे काम करने पड़े। 1964 में, 13 वर्ष की आयु में, श्री बसाक ने अपने पिता, श्री बांको बिहारी बसाक के साथ एक स्थानीय साड़ी बुनाई इकाई में काम करना शुरू किया जहाँ वे प्रति दिन 2.5 रुपये कमाया करते थे। उन्होंने अपनी किशोरावस्था घर-घर जाकर साड़ी बेचने में बिता दी और 1987 में बीरेन बसाक एंड कंपनी के निर्माण की दिशा में अग्रसर हुए।

3. श्री बसाक ने 1987 में अपने घर में आठ कामगारों के साथ बीरेन बसाक एंड कंपनी की शुरुआत की और उन्हें फुलिया की तंगेल और जामदानी बुनाई शैली का प्रशिक्षण दिया ताकि स्थानीय बुनकरों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके और उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान किया जा सके जिससे वे वंचित थे। इसी के साथ-साथ, उन्होंने कड़ा अभ्यास किया और अपनी कारीगरी को निखारा। उन्होंने नए-नए डिजाइन तैयार किए और जटिल तकनीकों के साथ प्रयोग किए। वह जीवनभर कारीगरों को सशक्त और बिजली से चलने वाले मशीनी करघा उद्योग के साथ कड़ी स्पर्धा में सफल बनाने के लिए, अपने डिजाइन और कला को मूर्त रूप देने के बेहतर और प्रभावी तरीकों की खोज करते रहे हैं। हाथ से बुने हुए बारीक और सुंदर नमूनों वाली, जामदानी, एक बुनाई तकनीक है। अपने गूढ़ डिजाइन के आधार पर, यह एक उन्नत और हाथ से बुनाई की चुनौतीपूर्ण तकनीक मानी जाती है। इस बुनाई में समय लगता है और एक-एक साड़ी को तैयार करने में एक साल तक लग सकता है।

4. 2015 में, "रामायण को प्रदर्शित करती हुई पहली डकाई साड़ी," के लिए, श्री बसाक का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था। इस साड़ी को बुनने में ढाई साल का समय लगा जिसे मलमल कोरा और टस्सर रेशम के रेशे में बुना गया है। 2015 में इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी इसे मान्यता दी गई थी। 2015 में, उनका नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था, जिसमें साड़ी पर भगवान गणेश की विभिन्न मनोदशाओं को प्रदर्शित करते हुए टस्सर सिल्क और मुगा सिल्क में बुनाई की गई थी। इस साड़ी को पूरा करने में उन्हें 1.2 साल लगे। उन्होंने 2018 में 3,726.43 मीटर (12,225 फीट 9 इंच) वाली दुनिया की सबसे लंबी साड़ी की बुनाई के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान हासिल किया।

5. श्री बसाक को अनेक प्रमाणपत्र, पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्हें हथकरघा विकास आयुक्त कार्यालय की ओर से 2009 का उत्कृष्टता प्रमाणपत्र, 2012 का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा 2013 का संत कबीर पुरस्कार प्रदान किया गया है।